B. A. History Hon's Part:- II

Paper: IV, Unit:- IV (d), Date: Lecture No.: 22

17.8.2020

Lession: जोर्डन का इतिहास

ओस्मान साम्राज्य काल में जोर्डन एक उपेक्षित प्रदेश था। दमिश्क - मदीना रेल-मार्ग यहीं से गुजरता था। इस प्रदेशों में अमन, जेराश, और पेट्रा में आज भी यूनानी-रोमन अवशेष देखने को मिलता है। पश्चिमी पर्वतीय प्रदेश ट्रांस जोर्डन में लगभग पाँच लाख लोग रहते थे। प्रथम विश्वयुद्ध काल में ट्रांसजोर्डन फैजल की अरब सेना और तुर्की की सेना का युद्ध-स्थल था। युद्ध काल में हेजाज रेल-मार्ग की बड़ी क्षति हुई। नवम्बर 1918 और जुलाई 1920 के बीच क्षणिक अरब राज्य सीरिया का एक अभिन्न अंग था लेकिन दक्षिण सीमाएँ अनिश्चित थीं। उत्तर में अमन और केराक दमिश्क सरकार के अधीन थे दक्षिण का मान शहर और लाल सागर के अकाबा बन्दरगाह हेजाज के राजा हुसैन के प्रति भक्ति-भाव प्रकट करते थे। जुलाई 1920 से मार्च 1921 तक सीरिया में फैजल सरकार के पतन के बाद ट्रांसजोर्डन में कोई सरकार न थी। फरवरी 1921 में राजा हुसैन का दूसरा लड़का अमीर अब्दुल्ला ट्रांसजोर्डन आया। उनका इरादा फ्रांसीसी अधिकृत सीरिया पर आक्रमण कर वहाँ फैजल का शक्ति-पुनर्स्थापना करना था परन्तु उपनिवेश सचिव विंस्टन चर्चिल ने उसे ट्रांस जोर्डन का अमीर बनाने के लिए राजी कर लिया। अप्रैल 1921 में अब्दुल्ला अमान का अमीर बनाया गया। उसे ब्रिटिश सरकार से प्रतिमाह पाँच हजार पौंड दिया जाने लगा। 1882 में अब्दुल्ला का जन्म हुआ। 1919 में तुराबा में वह इब्न सऊद द्वारा पराजित किया गया। 1920 में दमिश्क की सीरियाई सम्मेलन ने उसे इराक का राजा बनाया। 1927 की जेद्दा संधि द्वारा इब्न सऊद ने ट्रांसजोर्डन का मान और अकाबा पर अधिकार मान लिया। ट्रांसजोर्डन का यहूदियों से राष्ट्रीय गृह समस्या से कोई संबंध नहीं था। ब्रिटेन के अतिरिक्त और किसी यूरोपीय देश का वहाँ कोई सरोकार नहीं था। ब्रिटेन का इस रेगिस्तानी भाग में मुख्य तीन हित थे। यह भूमध्यसागर और फारस की खाड़ी के बीच ब्रिटिश नियंत्रण स्थल-मार्ग से सम्बन्धित था। द्वितीय इसका शासक एक हाशमी राजकुमार था और ब्रिटेन की नीति हाशिमियों से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने की थी। तृतीय यह एक अरब प्रदेश था तथा इसके महत्वपूर्ण होने के कारण भी ब्रिटेन इसे किसी दूसरे यूरोपीय राज्य के अधीन देखना नहीं चाहता था। अन्य उपनिवेशों की भाँति ट्रांसजोर्डन का शासन-प्रबंध किया गया। ब्रिटिश सह-सरकार और सैनिक दल, अमीर अब्दुल्ला का देशी शासन था। 16 अप्रैल, 1928 को अब्दुल्ला की सहमति से ब्रिटिश अधिकारियों ने ट्रांसजोर्डन के लिए एक आंगिक विधि की घोषणा की। उपर्युक्त विदेशी दोनों के ऊपर फिलीस्तीन और ट्रांसजोर्डन में ब्रिटिश संरक्षण शासन था। अमन में एक स्थायी रेजीडेंट रखा गया। रेजिडेंट अरब प्रशासन का पर्यवेक्षण करता था। 20 फरवरी 1928 को जेरूसलम में एक आंग्ल-ट्रांसजोर्डियन समझौता पर हस्ताक्षर किया। 1934 में एक संशोधन द्वारा अमीर को विदेशों में वाणिज्य दूतों का नियुक्त-अधिकार दिया गया। जोर्डन को ब्रिटिश आर्थिक सहायता मिलती थी। यह आर्थिक सहायता प्रतिवर्ष एक लाख पौंड तक थी। 1940 के बाद यह बढ़कर प्रतिवर्ष बीस लाख पौंड हो गयी। आर्थिक सहायता राजनीतिक आर्थिक कारण थे। आर्थिक दृष्टिकोण से ट्रांसजोर्डन एक निर्धन था। कृषि और पशुपालन जीविका के मुख्य साधन थे। ट्रांसजोर्डन को दुलारा गया था। यह तस्करियों का अड्डा था। फिलीस्तीन के चुंगी क्षेत्र में रखा गया था। यह तस्करियों का अड्डा था। सीरिया, सऊदी अरब और ईराक के साथ इसकी सीमाओं की कठोर पहरेदारी के कारण तस्करी आसान और आदिक हो गई थी। 1921 में इसकी स्थापना हुई थी। इसके एक हजार सैनिक थे। ट्रांसजोर्डन में इस सेना की स्थापना और प्रशिक्षण कैप्टन एफ. जी. पीक ने किया था जिसने युद्धकाल में किसी ऊँट दल का नेतृत्व किया था।

पीक ने अरबी सेना की मदद से बेदुइनों छापामारों का सामना किया, वहाबी इख्वान के हमले को विफल किया और शांति व्यवस्था कायम रखी। जिसकी योग्यतापूर्ण सेवा के लिए अमीर ने उसे पाशा की पदवी से विभूषित किया। 1939 में उसकी जगह पर मेजर जॉन बेगोट ग्लूब आया। इसमें केवल ट्रांसजोर्डनियन ही नहीं अपितु, इराकी, हेजाज, फिलीस्तीनियन, सीरियन आदि भी थे। अरब सेना के अतिरिक्त वहाँ एक ट्रांसजोर्डन सीमा क्षेत्र भी था। इसका गठन 1928 के आंग्ल-ट्रांसजोर्डनियन संधि के बाद हुआ था। सीमा की रक्षा इसका ही काम था। द्वितीय विश्वयुद्ध काल में अरब सेना और जोर्डन सीमा दल का आधुनिकीकरण किया गया और दोनों का उपयोग ट्रांसजोर्डन की सीमा के बाहर किया गया। 1940 में अरब सेना में मरु यंत्रीकृत टुकड़ी का सृजन किया गया। 1941 में इराक में रशीद अली के विद्रोह-दमन में यंत्रीकृत टुकड़ी ने महत्वपूर्ण भाग लिया। 1948 में अरब इजरायली युद्धकाल में अरब सेना ने महत्वपूर्ण काम किया।

ट्रांसजोर्डन के अल्पसंख्यकों की कोई समस्या नहीं थी। 1944 में इसकी संख्या तीन लाख चालीस हजार थी जिनमें अधिकांश अरब और सुन्नी मुस्लिम थे। 1938 में आंगिक विधि के संशोधन और 1941 में ब्रिटेन के साथ समझौता के बावजूद भी ब्रिटिश राजनीतिक और प्रशासनिक प्रतिमान में तनिक भी परिवर्तन नहीं आया। एक अन्य घटना 1938 और 1941 के बीच हैफा-बगदाद सड़क के निर्माण की थी। इसकी कुल लम्बाई 1880 किलोमीटर थी। जिसमें 340 किलोमीटर ट्रांसजोर्डन गुजरती थी। 1921 और 1945 के बीच ट्रांसजोर्डन की विदेश नीति के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह कमजोर और पूर्णतः ब्रिटेन पर आश्रित था। हेजाज पर इब्न सऊद की विजय के समय से सऊद और अमीर अब्दुल्ला के बीच दुश्मनी भी रही। 1943-44 में ब्रिटेन ने युद्ध के बाद ट्रांसजोर्डन को स्वतंत्र करने की घोषणा की। फलतः जब 1946 में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में गठित ट्रस्टीशिप में नहीं रखने और इसे शीघ्र स्वतंत्र करने की घोषणा की इसके शीघ्र ही बाद 22 मार्च, 1946 को लन्दन में ब्रिटेन और ट्रांसजोर्डन ने एक संधि पर हस्ताक्षर किया जो 1930 की आंग्ल-ईराकी संधि से मिलती जुलती थी। 22 अप्रैल, 1946 को अमीर अब्दुल्ला ने राजा की पदवी धारण की। ट्रांसजोर्डन के बुद्धिजीवी उपर्युक्त संधि से असंतुष्ट थे। 15 मार्च, 1948 को अम्मान में आंग्ल-ट्रांसजोर्डनियन संधि पर हस्ताक्षर किया गया। ट्रांसजोर्डन की दो हवाईपट्टियों अम्मान और माफ पर ब्रिटेन का नियंत्रण बना रहा। साथ ही ट्रांसजोर्डन की बाह्य सुरक्षा के लिए एक आंग्ल-ट्रांसजोर्डनियन संयुक्त प्रतिरक्षा परिषद की स्थापना की गई।

□ डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर